

अहम् के वलय से होती है प्रेत शक्ति पराजित — आचार्य महाप्रज्ञ

—तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)—

श्रीडूंगरगढ़ 25 फरवरी : जिसका आभामण्डल शक्तिशाली होता है उसके पास भूत, प्रेत आदि अनिष्ट की भावना रखने वाली आत्माएं नहीं आती हैं। भगवान पार्श्व का आभामण्डल इतना शक्तिशाली था कि कर्मठ की प्रेत आत्मा उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी। वर्तमान में भूत, प्रेत, टोना टोटकों से पीड़ित अनेक व्यक्ति हमारे पास आते हैं। ऐसी दुष्ट शक्तियों से पीड़ित व्यक्ति अहम् का वलय बनाएं तो प्रेत शक्तियों को पराजित किया जा सकता है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कल्याण मंदिर स्तोत्र पर प्रवचन करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जिसके पास मंत्र की शक्ति होती है, आभामण्डल की शक्ति होती है वहां प्रेत शक्तियां निष्फल हो जाती हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मनुष्य दो प्रेरणाओं से कार्य करता है। एक मैत्री की प्रेरणा है और दूसरी विरोध की प्रेरणा है। जो मैत्री की प्रेरणा से काम करता है वह अच्छा होता है और जो विरोध की प्रेरणा से काम किया जाता है वह दुःख पैदा करने वाला होता है। किसी के द्वारा जब किसी को ठेस पहुंचाने वाले शब्दों का प्रयोग हो जाता है तो सामने वाले के मन में वैर की गांठ बंध जाती है और वह बदला लेने की सोचता है। वैर के साथ अनेक किस्से वर्तमान में घट रहे हैं। हम प्रतिदिन मीडिया में देख, सुन सकते हैं। पर ऐसे व्यक्तियों को ज्ञात होना चाहिए कि जो दूसरे का अहित करता है वह सबसे पहले स्वयं का ही अनिष्ट करता है। इस रहस्य को समझने वाला दूसरों का अनिष्ट नहीं करेगा। दूसरों का अनिष्ट कर अपना इष्ट करना चाहे, यह संभव नहीं है। जो यह सोचता है कि मैं दूसरों का अनिष्ट कर दूंगा यह उसका भ्रम होता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आध्यात्म की इन बातों को समझ लिया जाये तो सब लोग सुख शांति से रह सकते हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और जैनागम उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन में कहा कि संत धर्मकथा, उपदेश आदि से दुर्जन व्यक्तियों को सज्जन बनाने का कार्य करते हैं। संत के प्रति लोगों के मन में आस्था के भाव देखने को मिलते हैं। इसी कारण संतो की वाणी को ध्यान से सूना जाता है। सुनते सुनते ही कभी कोई बात उनके जीवन की दिशा बदल देती है। उन्होंने कहा कि गीता के 17 वें अध्याय में राजसिक वृत्ति वाले को जो आहार पसंद होता है उसका उल्लेख मिलता है। जिसको खट्टाई, नमकीन, अति उष्ण, रुक्स आहार अति मात्रा में पसंद होता है वह राजसिक वृत्ति वाला होता है। इस तरह का भोजन करने से अनेक बीमारियों का जन्म होता है। युवाचार्यवर ने कहा कि संयम को पुष्ट करने वाला, स्वास्थ्य को अच्छा रखने वाला आहार होना चाहिए।

उन्होंने विद्यार्थियों को विशेष तौर पर आहार संबंधी जागरुकता रखने की प्रेरणा देते हुए कहा कि विद्यार्थियों को जीभ के स्वाद में ही नहीं उलझना चाहिए। अगर इसमें मन लग गया तो ज्ञान प्राप्ति में दिमाग नहीं लग पायेगा। जिसे अच्छा कार्य करना है, ज्ञान और ध्यान करना है उसे खान-पान से आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जिस तरह से कोआ सक्रिय रहता है वैसे ही विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन में सक्रिय रहना चाहिए और श्वान की तरह निद्रा होनी चाहिए। पेट को खराब करने वाले पदार्थों के सेवन करने से बचना चाहिए।

तुलसीराम चौरड़िया

मीडिया संयोजक/सहसंयोजक